VOL- VIII ISSUE- I JANUARY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

पं. वि. ना. भातखंडे द्वारा रचित हिंदुस्तानी संगीत पध्दती क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 और 3 में उपलब्ध आश्रय रागों के लक्षणगीतों का चिकित्सक अध्ययन

प्रा. डॉ. रवींद्र रामभाऊ इंगळे,
संगीत विभाग प्रमुख, कै. सौ. कमलताई जामकर महिला महाविदयालय,
जिंतुर रोड, परभणी - 431401 (महाराष्ट्र)

रागोंकी जानकारी (स्वर, थाट, वादि - संवादि, जाती, गानसमय इत्यादि.) देनेवाला गीत इस दृष्टीसे लक्षणगीत का महत्व अनन्यसाधारण माना गया है | किसी भी राग को ठिक तरहसे समझने हेतु पर्वापार गुणिजनोंने उस राग का स्वरुप प्राचीन संगीत ग्रंथोंमें खोजनेका प्रयास किया है | मतंगमुनीव्दारा लिखीत ग्रंथ "बृहद्देशी" में "राग" शब्द की प्रथमत: उत्पत्ती पायी गयी है | उससे पूर्व भरतमुनीव्दारा लिखीत "नाटयशास्त्र" ग्रंथ में "जातीगायन" का संदर्भ मिलता है | बृहद्देशी के पश्चात राग यह शब्द सुस्थापित हुवा और तदनंतर शारंगदेवव्दारा लिखीत "संगीतरत्नाकर" ग्रंथ में "रंजयति इति राग:"इस प्रकार राग को परिभाषित किया गया | संक्षेप में यहाँ यह कहा जा सकता है की राग शब्द की उत्पत्ती एवं उन रागों का शास्त्रीय स्वरुप खोजने में आजतक कई सारे ग्रंथ लिखे गये | मिसाल की तौर पर संगीत रत्नाकर में 254 रागों का शास्त्रोक्त विवरण आया है |

उत्तर भारतीय संगीत के महान शास्त्रकार स्व. पं. विष्णु नारायण भातखंडेजी (10 अगस्त 1860 से 19 सितंबर 1936) ने इन सभी प्रकार के ग्रंथो का अध्ययन कर उत्तर भारतीय संगीत के रागों के शास्त्र का प्रमाणिकरण किया | इस दृष्टि से उनकेव्दारा लिखीत "श्रीमल्लक्षसंगीतम" (हिंदुस्तानी संगीत पध्दती शास्त्र - 4 खंड) और हिदुस्तानी संगीत पध्दती क्रमिक पुस्तक मालिका (क्रियात्मक - 6 खंड) इन दो ग्रंथ मालिकाओं का महत्व अनन्यसाधारण है | क्रमिक पुस्तक मालिकाओं के 6 खंडोंमें भातखंडेजीने हर एक राग के सरगमगीत, लक्षणगीत, बंदिश, ध्रुपद, धमार,तराणा, त्रिवट आदि कई रचनाओं का संग्रह दिया है | हर एक राग की जानकारी देनेसे पूर्व प्रारंभ में उस राग के प्राचनी ग्रंथों में आये संदर्भोंको संस्कृत श्लोक एवं अवतरणों के साथ लिखा गया है | इतनाही नही तो कुछ रागों के लक्षणगीतों का लेखन स्वयं भातखंडेजी ने "चतुर" उपनाम से किया है |

प्रस्तुत शोध लेख अंतर्गत स्व. पं. भातखंडेजीव्दारा लिखीत केवल आश्रय रागों के लक्षणगीतों की चर्चा की गई है | रागों के उत्पत्ती नुसार जो भेद पाये जाते है, उनमें आश्रय राग अर्थात जनक रागों का एक वर्ग है | वहि दुसरी ओर आश्रित अर्थात जन्य रागों का भी एक वर्ग है | वास्तव में देखा जाए तो शास्त्रीय संगीत की प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण करनेवाले छात्रों को लक्षणगीत यह गीतप्रकार सिखाया जाता है | साथ ही साथ उन्हे आश्रय राग और आश्रित राग यह संकल्पनाएं भी सिखाई जाती है |

जब थाट और राग का एक ही नाम हो , तो उस राग को आश्रय राग के नामसे जाना जाता है | किन्तु यदि थाट और राग का नाम अलग अलग हो, तो ऐसी स्थिती में उस राग को आश्रित राग के

नाम से जाना जाता है | साधारणत: स्व.पं. वि.ना. भातखंडेजीव्दारा निम्न प्रकारसे 10 थाटों के नाम उनके स्वरलक्षण अनुसार दिये गये है |

1) बिलावल - सभी शुध्द स्वर
2) कल्याण - तीव्र मध्यम का प्रयोग
3) काफि - गांधार एवं निषाद कोमल
4) खमाज - कोमल निषाद
5) भैरव - कोमल रिषभ एवं कोमल धैवत
6) मारवा - कोमल रिषभ, तीव्र मध्यम
7) पुर्वी - कोमल रिषभ, कोमल धैवत एवं तीव्र मध्यम
8) असावरी - गांधार, धैवत, निषाद कोमल
9) भैरवी - रिषभ, गांधार, धैवत, निषाद कोमल
10) तोडी - रिषभ, गांधार, धैवत कोमल, तीव्र मध्यम

इन सभी आश्रय रागों के क्रमिक पुस्तक मालिका के खंड 2 और खंड 3 में वर्णित लक्षणगीत निम्नप्रकार से पाये जाते है -

1 राग (अल्हैया) बिलावल (तीनताल)

स्थाई :- तब कहत अल्हैया रुप "चतुर" जब शुध्द सुरन को मल मिलावत,दोनो निखाद लगत सुमधुर ||

अंतरा :- धैवत वादि गा संवादी, समय कहत दिन प्रथम प्रहर ||

संचारी :- बडो ज्ञान वाको जो जानत, अष्टभेद बिलावलि सुसंमत ||

अभोग :- शुध्द अल्हैया देवगिरी कुकुभ साख शुक्ल इमनी परदा तब ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 पृष्ठ 79)

भावार्थ :- "चतुर" अर्थात पं. वि.ना. भातखंडे कहते है, की बिलावल राग मे सभी स्वर शुध्द है और दो निषादों का प्रयोग किया जाता है | वादि स्वर धैवत और संवादि स्वर गांधार है | गायन समय दिन का प्रथम प्रहर है | विव्दान लोग बिलावल के शुध्द बिलावल, अल्हैया (बिलावल), देवगिरी (बिलावल), कुकुभ (बिलावल), साख, शुक्ला (बिलावल), इमनी बिलावल, सरपरदा बिलावल ऐसे आठ भेद मानते है |

2 राग (यमन) कल्याण (एकताल)

स्थाई :- सब गुणिजन इमन गात तीवर सूर करत साथ

सा सा रे रे ग ग म म प प ध ध नी नी रे रे ग रे सा रे सा नी ध प ||

अंतरा :- सुर वादि गांधार साध, समवादि कर निखाद रात समय प्रथम प्रहर "चतुर" सुजन मन रिझात ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 पृष्ठ 21)

भावार्थ :-"चतुर" अर्थात पं. विष्णु नारायण भातखंडेजी कहते है, यमन राग में तीव्र स्वर (मध्यम) साथ करता है | (इस लक्षणगीतके स्थाई के अंत में एक स्वरमालिका दि गयी है |) यमन राग का वादि स्वर गांधर और संवादि स्वर निषाद है | यमन राग रात्री के प्रथम प्रहर में गाया जाता है | यह एक मनोरंजक (मन को रिझानेवाला) राग है |

3 राग काफि (एकताल)

स्थाई :- गुणी गावत काफी राग खरहरप्रिय मेल जनित

कोमल ग नि उज्वल पर, सुर पंचम वादि साध |

अंतरा :- सरल सरुप विपश्चित, मानत सब सुध अविकल,

आश्रय गुनि "चतुर" कहत ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 पृष्ठ 320)

भावार्थ :- "चतुर" अर्थात पं. विष्णु नारायण भातखंडेजी कहते है खरहरप्रिय (कर्नाटक संगीत का मेल) थाट से काफी राग की निर्मिती होती है | इस राग में गांधार एवं निषाद स्वर कोमल है | प रे मुख्य संगती और पंचम वादि स्वर है | ग एवं नि के

अतिरिक्त अन्य सभी स्वर शुध्द है | यह एक आश्रय राग है |

4 राग खमाज (तीलताल)

स्थाई :- तब कहत "चतुर" खमाज रागनि, जब हरिकांभोजी मेल करत |

अंतरा :- सुर गांधार को वादी समझत, षाडव संपुरन तजत रिखब ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 पृष्ठ 124)

भावार्थ :- "चतुर"अर्थात पं. विष्णु नारायण भातखंडेजी कहते है, खमाज राग की उत्पत्ती हरिकांभोजी (कर्नाटक संगीत का मेल) थाट से हुई है | इस राग का गांधार वादि स्वर है | आरोह में रिषभ को वर्जित करने से इसकी जाती षाडव संपूर्ण बनती है |

5 राग भैरव (तीनताल)

स्थाई :- भैरव लच्छन गाय गुनीवर, कोमल सुरधर ग म नी सुध कर
प्रात समय रिझत नारी नर |

अंतरा :- धैवत होत प्रधान जीव सूर, रेखब सहचर होत पुरस्सर,
मालव ठाठ लिखत अति सुंदर, भक्ती रससों गाय गुनि "चतुर" ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 पृष्ठ 170-171)

भावार्थ :- "चतुर" अर्थात पं. वि. ना. भातखंडेजी कहते है, भैरव राग के लक्षण गाते समय गुनीजन लोग उसमें रिषभ और धैवत कोमल करते है और गांधार, मध्यम और निषाद स्वर शुध्द लेते है| प्रात समय में गाये / बजाये जानेवाला यह राग सभी स्त्री - पुरुषों के मन को रिझाता है | धैवत इसका प्रधान (वादी) स्वर है | मालव (कर्नाटक संगीत का मेल) थाट से उत्पन्न यह राग भक्ती रस से भरपूर है |

6 राग मारवा (झपताल)

स्थाई :- तीवर ग म ध नी सुर, मलन सजत मधुर विकरत रिखब भीतर, मारुव कहत "चतुर" ||

अंतरा :- राग गावत सुकर, पंचम विवादि सुर, संवाद रि ध विचर, अस्त दिन अति रुचिर ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 3 पृष्ठ 876-877)

भावार्थ :- "चतुर" अर्थात पं. वि.ना. भातखंडजी कहते है, की मारवा राग में गांधार, मध्यम, धैवत और निषाद स्वर तीव्र लगते है | (तीव्र ग,ध,नी का तात्पर्य उत्तर हिंदुस्तानी संगीत में शुध्द स्वरों से है |) केवल रिषभ स्वर विकृत (कोमल) प्रयोग में लाया जाता है | इस राग में पंचम स्वर विवादि के नाते लगाया जा सकता है | रिषभ एवं धैवत का संवादि मधुर लगता है | दिन के अस्तंगत समय में (दिन का अन्तिम प्रहर) यह राग खुलता है |

7 राग पूर्वी (तीनताल)

स्थाई :- पूरवि के सुर गाय गुनीवर
ग रे ग म प ध म प ग रे ग म ग रे सा
म ध रे नी ध नी म गम ग नी नी सा रे ग
जहाँ अंग मनोहर पूरवि |

अंतरा :- वादि गांधार निखाद सुसहचर,
मध्यम जोग दिखावत सुंदर,
संधिप्रकाश समय कहत "चतुर" |

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 3 पृष्ठ 843)

भावार्थ :- "चतुर" अर्थात पं. वि.ना. भातखंडेजी कहते है, की गुनिजन पुरवि राग के सुरों का गायन करते है | (यहाँ पर प्रस्तुत लक्षणगीत में पुर्वी राग की एक सुरावट दि गयी है |) यह सुरावट पुर्वी राग का मनोहर अंग है | इस राग का वादि स्वर गांधार एवं संवादि स्वर निषाद है | दो मध्यमों का प्रयोग उत्तम योग दिखाता है | इस राग का प्रयोग समय संधिप्रकाश है |

8 राग आसावरी (चौताल)

स्थाई :- "चतुर" राग गायो आसावरी औडव संपुरन बतलायो |

अंतरा :- आरोह ग नि को तजत, अवरोह संपूरन, धैवत वादि सूर दिखलायो ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 पृष्ठ 358-359)

भावार्थ :- "चतुर" अर्थात पं. विष्णु नारायण भातखंडेजी कहते है, की आसावरी राग की जाती ओडव - संपूर्ण है | आरोह में गांधार एवं निषाद को वर्जित किया जाता है और अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग किया जाता है | इस राग का वादि स्वर धैवत है | अर्थात यह उत्तरांगप्रधान राग है |

9 राग भैरवी (तीनताल)

स्थाई :- भैरवी कही मनमानी, कोमल सब सुर कर गुनि गावत, प्रथम प्रहर की रानी हो |

अंतरा :- मध्यम वादी सुर समवादी, भक्ती रस की खानी, सब कोई गावत सब को रिझावत,
भैरवी शास्त्र प्रमानी हो ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 पृष्ठ 392 - 393)

भावार्थ :- पं. वि.ना. भातखंडेजी कहते है, की भैरवी रागिनी में सभी स्वर कोमल लगते है | दिन के प्रथम प्रहर में यह राग गाया / बजाया जाता है | इस राग का वादी स्वर मध्यम है | भक्तीरस से भरपूर यह राग सभी लोगों के मन को रिझाता है | शास्त्रों में इस राग का उल्लेख पाया जाता है |

10 राग तोडी (एकताल)

स्थाई :- बिकरत जब ध ग री करत, म नी तीवर सुर संगत
सुगम सरल संपूरन, गुनि टोडी को बरनत |

अंतरा :- धैवत जहाँ अंश रहत, रि ग सुर जहाँ सहचर मत
पंचम कोउ अल्प कहत, "हररंग" को मत अभिमत ||

(**संदर्भ -** क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 पृष्ठ 433 - 434)

भावार्थ :-हररंग अर्थात पं. विष्णु नारायण भातखंडेजी कहते है, की तोडी राग में रिषभ, गांधार एवं धैवत स्वर कोमल लगते है | मध्यम तीव्र और निषाद शुध्द है | इस राग की जाती संपूरन है | ऐसा वर्णन गुनिजन करते है |

इस राग में धैवत का प्रयोग अंश स्वर के नाते करना चाहिये | रे ग स्वर सहचर है | (तोडी राग में रेगरेसा यह प्रधान स्वरसंगती है |) पंचम का प्रयोग अल्प प्रमाण में करना उचित होगा |

सारांश

स्व. पं. विष्णु नारायण भातखंडेजी को उत्तर हिंदुस्तानी संगीत के सभी रागों का प्रमाणिकरण करने का श्रेय दिया जाता है | इतनाही नही बल्की इन लक्षणगीतों में उन्होने कुछ जगहों पर कर्नाटक संगीत से संबंधित कुछ संदर्भ भी दिये है | इस दृष्टि से अगर हम देखे तो थाटों के प्राथमिक रागों के ये सभी लक्षणगीत उनके प्राचीन ग्रंथों के संदर्भोंसे परिपूर्ण है | आश्रय रागों के इन लक्षणगीतों का अध्ययन ठिक तरह से किया जाये तो इन थाटोंमें से उत्पन्न अन्य रागोंको समझने में आसानी हो सकती है |

संदर्भ ग्रंथ :-

1 संगीताचार्य पं. विष्णु नारायण भातखंडे - लेखक डॉ. श्री. ना. रातांजनकर (प्रकाशक - महाराष्ट्रराज्य साहित्य व सांस्कृतीक मंडळ, मुंबई)
2 संगीत विशारद - लेखक बसंत (हथरस प्रकाशन, उत्तर प्रदेश)
3 हिंदुस्तानी संगीत पध्दती क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 - लेखक पं. विष्णु नारायण भातखंडे (हथरस प्रकाशन, उत्तर प्रदेश)
4 हिंदुस्तानी संगीत पध्दती क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 3 - लेखक पं. विष्णु नारायण भातखंडे (हथरस प्रकाशन, उत्तर प्रदेश)